समकाल की आवाज़

वीरेंदर भाटिया
चयनित कविताएँ

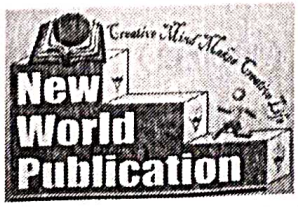

© लेखकाधीन

प्रकाशक : न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन
C-515, बुद्ध नगर, इंद्रपुरी, नई दिल्ली -110012
मो. : 8750688053
ईमेल : newworldpublication14@gmail.com
संस्करण : 2022
मूल्य : 175 रुपये
मुद्रक : सूरज प्रिंटर्स, दिल्ली (110032)

VIRENDRA BHATIYA : CHAYANIT KAVITAYEN
by : VIRENDRA BHATIYA

समर्पण

युग पुरुष शहीद रामचंद्र छत्रपति

ਸਮਰਪਣ

[illegible]

[illegible]

प्रकाशकीय

साथियो,

जैसा कि आप जानते हैं कि पिछले वर्ष न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन ने 'समकाल की आवाज' शृंखला के तहत वर्ष 2021 में 18 लेखकों (महेश पुनेठा, अरुण शीतांश, भास्कर चौधुरी, वसंत सकरगाए, निदा नवाज, भरत प्रसाद, देवेन्द्र आर्य, विनोद पदरज, विजय गौड़, नवनीत पांडे, अजय कुमार पांडे, विमलेश त्रिपाठी, रामजी तिवारी, अजेय, शिरोमणि महतो, राजेश पाल, नरेश अग्रवाल और संतोष चतुर्वेदी) को प्रकाशित किया था। इस वर्ष (2022) में भी न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन द्वारा 'समकाल की आवाज' शृंखला के तहत 21 कवियों की पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

यह सीरीज क्यों?

हमारा विश्वास है कि जब भी मनुष्यता पर संकट आया, समकालीन कविताएँ मनुष्यता को बचाने के लिए सबसे पहले सामने आती हैं। इसलिए हमें कविता पर विश्वास है। अफ्रीकी कवि ए.एन.सी कुमालो ने लिखा है कि...

हमें ऐसी कविताओं की जरूरत है
जिनमें खून के रंग की आभा हो
और दुश्मनों के लिए आती हो जिनसे
यमराज के भैंसे की घंटी की आवाज!

कविताएँ
जो आतताइयों के चेहरे पर
सीधा वार करती हों
और उनके गुरूर को तोड़ती हों!

कविताएँ
जो लोगों को बताएँ
कि मृत्यु नहीं, जीवन
निराशा नहीं, आशा
सूर्यास्त नहीं, सूर्योदय
प्राचीन नहीं, नवीन
समर्पण नहीं, संघर्ष!

कवि, तुम लोगों को बताओ
कि सपने सच्चाई में बदल सकते हैं
तुम आजादी की बात करो
और धन्नासेठों को सजाने दो
थोथी कलाकृतियों से अपनी बैठकें!

तुम आजादी की बात करो
और महसूस करो लोगों की आँखों में
जनशक्ति की वह ऊष्मा
जो जेल की सलाखों को
सरपत घास की तरह मरोड़ देती है
ग्रेनाइट की दीवारों को ध्वस्त करके
रेत में बदल देती है!

कवि,
इससे पहले कि यह दशक भी
अतीत में गर्क हो जाय
तुम जनता के बीच जाओ और
जन संघर्षों को आगे बढ़ाने में
मदद करो !

किसी भी काल में एक साथ अनेक आवाज़ें मौजूद रहती हैं, लेकिन कोई जरूरी नहीं उसमें से हर आवाज 'समकाल की आवाज' हो। समकाल की आवाज उसी आवाज को कहा जा सकता है, जो अपने समय और समाज को सही रूप में प्रतिबिंबित करने के साथ-साथ उसे आगे की ओर ले जाती हो अर्थात

आधुनिक जीवन मूल्यों की वाहक और वैज्ञानिक चेतना से लैस हो। साथ ही हाशिये में पड़ी धाराओं को भी गहराई से अभिव्यक्त करती हो, विशेष रूप से उन आवाजों को जिन्हें मुख्यधारा की आवाजों के शोर में बहुत कम सुना या फिर अनसुना कर दिया जाता है। ऐसी आवाज वर्ग, जाति, धर्म, लिंग, क्षेत्र जैसे विभाजनों से ऊपर, सत्ता प्रतिष्ठानों, सत्ता के केंद्रों, शहर-महानगर के अभिजात्य इलाकों से दूर गाँवों, कस्बों, जनपदों में बसे लोक का प्रतिनिधित्व करती है। समकाल की आवाज अपने समय व समाज के आभासी यथार्थ को ही नहीं दिखाती है, बल्कि उसके सारतत्व तक ले जाती है और मानवीय संवेदनाओं का विस्तार करती है। उस आवाज में किसी तरह का तामझाम या दिखावा नहीं होता है, वह पहाड़ी नदी की तरह पारदर्शी होती है।

समकाल की आवाज हमारे समय के साहित्य, संगीत, कला, सिनेमा, राजनीति के माध्यम से सुनी जाती है। समकालीन साहित्य इसका सबसे बड़ा जरिया है। हम 'समकाल की आवाज' शृंखला के माध्यम से साहित्य में मौजूद इस आवाज को पकड़ने और सामने लाने की एक छोटी-सी कोशिश कर रहे हैं। यह एक शुरुआत है। हम इस सिलसिले को बहुत दूर तक ले जाना चाहते हैं। आरम्भ हम कविता से कर रहे हैं। इसके अंतर्गत हमने हर कवि की चयनित कविताएँ आमंत्रित कीं और साथ में उनका आत्मवक्तव्य। हम कविताओं और उनकी रचना प्रक्रिया के रास्ते समकाल की आवाज को सुनना-समझना चाहते हैं। इस चयन में हमने वरिष्ठता या कनिष्ठता का कोई ध्यान नहीं रखा है। हमने दूर-दराज क्षेत्रों से इसकी शुरुआत की है। जिन रचनाकारों तक हम पहुँच पाए हमने उनसे पांडुलिपि आमंत्रित की। हाँ, यह कोशिश जरूर की कि हर तरह की पहचानों को इसमें प्रतिनिधित्व मिल सके। बावजूद इसके हम उसमें पूरी तरह खरे नहीं उतर पाए। यह हमारी पहुँच की सीमा कही जा सकती है। आगे हम पूरा प्रयास करेंगे। हमें आशा है हमारी इस महत्वाकाँक्षी परियोजना को आपका समर्थन मिलेगा। हम इस शृंखला में सम्मिलित सभी कवियों का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं कि उन्होंने बहुत कम समय में हमारे अनुरोध को स्वीकार करते हुए अपनी पांडुलिपि हमें भेजी। साथ में हम अपने उन तमाम सहयोगियों का भी आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सहयोग से यह परियोजना सम्भव हो पाई।

-चयन मण्डल

न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन

आत्मकथ्य

एक समय की बात है, वरिष्ठ साहित्यकार श्री पूरन मुद्गल जी ने मुझसे सवाल किया कि तुम कविता क्यों लिखते हो? उस समय साहित्यकार श्री हरभगवान चावला और बहादुर पत्रकार श्री रामचंद्र छत्रपति भी मौजूद थे! मैंने कहा, मालूम नहीं, बस कोई ख्याल आता है और कलम चलने लगती है!

उन्होंने मुझे डांट लगाई! बोले यदि लेखक को यह मालूम नहीं कि वह लिखता क्यों हैं तो इससे अधिक खतरनाक बात कोई और नहीं हो सकती! ऐसी कलम क्या लिखेगी या कलम की जिम्मेदारी क्या है यह लेखक को मालूम नहीं तो वह कल को स्तुतियां भी लिख सकती है!

मैं कविता लिखता था और पूरा सच में भेज देता था! छत्रपति जी अच्छी कविता लगा देते, हलकी कविता दबा लेते! लेकिन गुरुजनो की उस बात ने मुझे समझाया कि कविता लिखते वक्त आपकी दोहरी जिम्मेदारी होती है! एक कविता के प्रति और दूसरी उस वर्ग के प्रति जिसके लिए आपकी कविता आवाज बनेगी! और कविता को किस वर्ग की आवाज बनना चाहिए यह तुम्हें बताने की जरूरत नहीं है!

कविता, समझाने वाले गुरुजनो में श्री परमानन्द शास्त्री श्री हरभजन रेनू और श्री रमेश शास्त्री भी महत्वपूर्ण बातें समझाते रहे! बावजूद इसके, इनकी असीमित समझ और असीमित ज्ञान में से मैं एक कतरा भर सीख पाया!

मुझे लगता है, हर लेखक को पहले यह दृष्टि अवश्य साफ कर लेनी चाहिए कि वह लिखता क्यों है!

-वीरेंदर भाटिया

ಪ್ರಾಕ್ಕಥನ

अनुक्रम

प्रकाशकीय	5
आत्मकथ्य	9
हम जो हम हैं	13
सोचना सिर्फ सोचना नहीं होता	14
चिड़िया-उड़	16
पैरोल मांगती लड़कियां	17
अनुकूलन	20
युद्ध लड़ रही हैं लड़कियां	22
मुसलमान से नफरत करो	25
क्या है कविता	27
कवि को खत	28
जौहर करो पद्मावती	29
वे आये थे साहब	32
औरतें पागल होती हैं	34
हमने जिसे मां कहा	36
वे राष्ट्रवादी नहीं हैं	37
ये बचाएंगे	39
जिन्हें महारत थी	41
फ्रेंड रिक्वेस्ट	43
घंटा घर चौक	45
ठीकरा	47
कोई तो है	49
अपने अपने गणित	50
कहाँ थे कवि तुम	52
जाने वो कैसे लोग थे	53
चेतन आदमी	56
धर्म	59
दंगो के बाद	60

घिसटने से इंकार करें 61
झूठ के पांव 63
लड़की हो तुम 64
मृत्यु की तैयारी पूरी रखो 66
बोलना मत 68
नियम 71
गण दिल्ली आ रहा है 72
कौन लोग थे वे 74
मुझे बनारस नहीं जाना 76
नग्न होना 79
बिना लड़खड़ाये 81
स्टेचू 83
गलती जनता की थी 85
हम तुम्हें झुक कर सलाम करते हैं। 87
मकड़ी 89
किसान जानता था 91
वे किसान थे 93
90 दिन 95
किसान के पास 97
मजदूर 98
मुझे उम्मीद सिर्फ स्त्रियों से है 101
चाल-चलन 102
आओ खुदाई करें 103
भूल जाता हूं बहुत कुछ 104
नग्न होना 107
सुंदर स्त्रियां 109
राजा और शतरंज 111
क्या है कविता 113
स्थगित मत करना कविता 114
तुम्हारे चले जाने के बाद 115
जब कोई तुम्हें सेक्युलर कहे 117

हम जो हम हैं

हम
मछलियों को पानी में डूबने से बचाते हैं
हम
हिरनों को समझाते हैं
कि यूं हवा में कुलांचे भरना अच्छी बात नहीं
हम
चिड़ियों से कहते हैं कि उड़ोगी तो गिर जाओगी

हम
स्त्री को भी
मछलियों की तरह बचाते हैं
हिरनों की तरह समझाते हैं
चिड़ियों सा बरगलाते हैं

स्त्री ने फिर पलट कर पूछा एक दिन
तुम पानी के मगरमच्छ
जंगल के शेर
और आसमान के बाज को क्यों नहीं समझाते कभी

सोचना सिर्फ सोचना नहीं होता

सोचना
सिर्फ सोचना नहीं होता

सोचना
कि
प्रेयसी की आँख एक गहरी झील
और डूबते जाना
डूबते जाना और किनारा ढूंढ़ने की चाह ना रहना,
सोचना ये नहीं होता

माँ ने कहा चाय चीनी दाल नहीं है
जेब की अंतड़ियां बाहर निकाल कर बूरा झड़का देना
सोचना फिर भी कि चाय चीनी दाल तो लानी ही है कैसे भी,
सोचना यह भी नहीं होता

सोचना यह भी नहीं
कि
रोज रोज की घुटन से आजिज पत्नी से उलझ पड़ना
और फिर भीतर के इंसान से बात करना
कि क्यों लड़वाया तुमने

सोचना कुछ और है
कि क्यों कोई सदियों से
एक ही तल पर रेंगता है
और बिना सोचे मर जाता है

सोचना कुछ और है
कि गर्भनाल से छूटते ही
भ्रमनाल मे लड़ रहे हम अभिमन्युओं को
या तो द्रोण समझ आ जाए पूरा
या फिर चक्रव्यूह

चिड़िया-उड़

बिटिया ने कहा
चिड़िया उड़

माँ ने कहा, उड़

बिटिया ने कहा
कोयल उड़

माँ ने कहा, उड़

बिटिया ने कहा
बिटिया उड़

माँ ने ऊँगली रोक ली
डबडबायी आंखों से बिटिया को देखा
लम्बा सांस भीतर लिया
और ऊँगली आकाश की ओर उठा दी

पैरोल मांगती लड़कियां

चिड़िया सी फुदकती उड़ती चहकती लड़की
रस्मी पिंजरे में कैद कर दी गयी है
लाल जोड़े, लाल सिंदूर, और शर्म की लाली में
लाल हुई लड़की
रक्तिम आभा और उत्साह से स्वीकारती है पिंजरा

पिंजरा लड़की की कांति छीनता है सबसे पहले
बेड़िया कस देता है
पंख उतार लेता है
और कहता है
उड़ना चाहो
तो उड़ सकती हो
हम लड़कियों पर बंदिश नहीं रखते
हम आधुनिक सोच के लोग हैं

लड़की उड़ती नहीं
उड़ नहीं सकती
वह पैरोल मांगती है सिर्फ
कि लौट आएगी वापिस,
कुछ दिन
अपने हिसाब से
जी लेने की छुट्टी दे दो

पैरोल पर गए कैदी को लेकिन
सशर्त दी जाती है छुट्टी

कि आचरण खराब हुआ
तो सोच लेना

पैरोल मांगती लड़कियों के दर्द
उनकी आंखों में जज्ब हैं
कोर से जो बूंद टपकती है
वह समन्दरों से खारी है
खार के सैलाब को मगर
बूंद-बूंद टपकाती हैं लड़कियां
ताकि सैलाब में बह ना जाए
स्त्रियों के कंधों पर खड़ी की गई यह व्यवस्था

पैरोल पर आई लड़कियों को
मांएं भर-भर दुलार देती हैं
मन भर खिलाती हैं
जीने की शक्ति भरती हैं
भाई और पिता जबकि
बौराये रहते हैं
व्यवस्था में समायोजित होते
एक अन्य स्त्री को देखकर

मां को दीखते हैं सिर्फ
नोच लिए गए पँखों के घाव
मां
पैरोल पर आई लड़की को देखती है
कसमसा कर रह जाती है
आसमान को निहारती है

दुआ मांगती है
कि मानवीय जरूर हो पिंजरा

मां जानती है मगर
कि ना पिंजरा कभी मानवीय होता है
न पिंजरे की व्यवस्था

अनुकूलन

मैंने कहा
दूध खराब हो गया है
उसने कहा
दूध खराब नहीं होता कभी
तुमसे उसकी अनुकूलता बदल गयी है

मुझे बहुत गुस्सा आया
मैंने कहा
ये आलू जो सड़ गया है
ये प्याज जो
बास मार रहा है
क्या ये भी खराब नहीं?

उसने कहा
नहीं
इनकी तुमसे अनुकूलता बदल गयी है

मेरे गुस्से का पारावार न रहा

उसने कहा
कुछ भी खराब नहीं होता दरअसल
सिर्फ अनुकूलन बदलता है

मैंने कहा
जो सड़ जाता है, गल जाता है, बदबू देता है

उसे खराब होना कहते हैं महोदय

उसने पकड़ी मेरी बात
कहा
सब्जी सड़ जाती है जैसे
वैसे ही
सड़ जाता है समाज भी
सड़ जाता है धर्म भी
सड़ जाते हैं वाद भी
हमें लेकिन बास नहीं आती

मालूम है क्यों?
क्योंकि
सड़ी हुई चीजो का अनुकूलन
कीड़ो के लिए होता है।

युद्ध लड़ रही हैं लड़कियां

कोख में आने से जन्मने तक
जन्मने ने मर जाने तक
युद्ध लड़ रही है लड़कियां

हालांकि वे
नहीं लड़नी चाहती कोई युद्ध
उन्हें नहीं जीतने गढ़
नहीं जीतने निजाम
नहीं ही जीतने इंद्रप्रस्थ
वे नहीं लड़ना चाहती कोई कुरुक्षेत्र
कुरुक्षेत्र हैं कि थोप दिए गए हैं उनपर
लाद दिये गए हैं
वे बिना गांडीव, बिना रथ, बिना कवच, बिना सारथी
कुरुक्षेत्र में हैं हर समय
बिना किसी लक्ष्य
बिना किसी लोभ
वे युद्धक्षेत्र में हैं
कि सांस ले सकें दो पल
देख सकें आकाश
जी ही सकें
कि कोई जीने दे उन्हे
जीने जैसा
वे निरन्तर लड़ रही हैं
थोपे हुए युद्ध

रहा होगा ये नियम किन्हीं समयों में
की निषिद्ध है रात में युद्ध लड़ना
लड़कियों के लिए मगर
हर समय युद्ध है
हर काल युद्ध है
पल युद्ध है, पहर युद्ध है,
दिन युद्ध है,
और रात बड़ा युद्ध है
बड़े खतरे आसन्न हैं रात की चुप्पी में

युद्ध लड़ रही हैं लड़कियां
बिना गीता के
बिना कृष्ण के
और द्वंद्व हैं कि पस्त किये जाते हैं उन्हें
युद्धों के द्वंद्व से बड़े हैं
स्त्री के द्वंद्व
अर्जुन से बड़े हैं
द्रोपदियों के द्वंद्व
वे पुकारती है कान्हा को
कि स्त्री युद्धों के संदर्भ में भी
कोई तो गीता कही होती
द्रोपदी को ही सुनाते कोई गीता ज्ञान
कि युद्ध लड़ो द्रोपदी
पहचानो स्वजन, परिजन और दुर्जन
तुम देह नहीं हो द्रोपदी

हद है न कान्हा
जिस मुल्क में पग पग बैठे है व्याख्याता

यह बताते हुए
कि मनुष्य देह नहीं आत्मा है
उस मुल्क की मति पर देह का लावण्य हावी है
और साँसों से सड़ांध रिस रही है

हद है ना कान्हा
कि गीता वाले तुम्हारे इस मुल्क में
लड़की को देह बचाने के लिए
युद्ध लड़ने पड़ते हैं

मुसलमान से नफरत करो

माई बाप का हुक्म है
मुसलमान से नफरत करो

हम करेंगे हुजूर
हम कर रहे हैं हुजूर
हुक्म की तामील करेंगे माईबाप
नहीं पूछेंगे कि क्यो करें नफरत
'क्यो' शब्द माईबाप की शान में नहीं बोला जाता हुजूर

हमने 'क्यों' तब भी नहीं बोला
जब आपने कहा बौद्धों से नफरत करो
हमने की ना
लूटा, जलाया, भगाया
क्या-क्या ना किया,
एक दिन चुपके से आपने कहा
बुद्ध विष्णु के अवतार हैं
हमने ना पूछा
कि विष्णु पुत्र तो भाई थे हमारे
अपने ही धर्मभाईयों से नफरत का हुक्म क्यों

आपने कहा
शूद्र से नफरत करो
हमने की हुजूर
भर-भर नफरत की
बस्तियां जलाई

लुगाईयां लूटीं
पानी-मंदिर,
तीज-त्योहार
वार-व्यवहार से खदेड़ दिया उनको

आपने कहा
हमने माना हुजूर
हमने नहीं पूछा
ये भी अपने धर्मभाई थे
इनसे नफरत क्यों

हम बाईबाप का हुक्म बजायेंगे
जब कहेंगे आप कि सिख को उग्रवादी कहो
हम कहेंगे
जब कहेंगे आप कि ईसाई को लुटेरा कहो
हम कहेंगे
जब कहेंगे आप कि मुसलमान को आतंकवादी कहो
हम कहेंगे

गुस्ताखी माफ करें हुजूर
तो एक बात पूछें?
कि नफरत का नियम शास्वत है
या जरूरत के हिसाब से फैलाई जाती है नफरत
एक बात पूछें माईबाप
कि धर्म की हानि हो तो हम हथियार उठा लें
धर्म का लाभ हो तब हमें कुछ मिलेगा क्या?

क्या है कविता

कविता भर्त्सना का औजार नहीं
भड़ास नहीं कविता
निज वेदना जाहिर करने का औजार नहीं
शब्द विलास नहीं कविता
उकड़ू पड़े जीवन के इर्द गिर्द घूमते ख्यालातों की पोटली नहीं है कविता
अपनी जकड़ने तोड़ो कवि
उकड़ू से सीधे तनो पहले
फिर देखो सभी उकड़ू बैठे लोगो को
खुद से पूछो
क्या तुम्हारी कविता इन्हें सीधा खड़ा कर सकती है?
कविता बस इतनी सी चीज है

कवि को खत

आप कैसे हैं
कवि
बहुत दिन हुए आप से मिले
आपकी पहाड़ की यात्रा कैसी रही
कितने दिन और रहेंगे उधर
इधर उथल-पुथल का दौर जारी है
जातीय दंगा फिर हो गया है
रोटी का सवाल गायब है फिर से
वाद पर विवाद भारी हैं
और विवाद वाद घोषित हुए जा रहे हैं
क्रिकेट और राष्ट्रवाद अपने चरम पर हैं
पांच पैरो वाली गाय फिर बस्ती में आई है
खूब चढ़ावा जा रहा है
महंगाई दर नीचे आ गयी है
प्याज दाल और सब्जियां महँगी हो गयी है पहले से
विकास दर बढ़ने लगी है
नौकरी हट गयी है बेटे की
फसल भी मर गयी है इस बार
सरकार मुआवजा नहीं देगी
कह दिया है उसने
आप तो ठीक से हैं न कवि
भाभी कैसी है
इधर गर्मी बढ़ने लगी है
आप ठण्ड से बच कर रहना

जौहर करो पद्मावती

सभी पद्मवतियों को आदेश है
जौहर करो
आग में कूद पड़ो
जब हार जाएं तुम्हारे यौद्धा पति
लड़ो मत
जल मरो

पवित्र रहो
पतिव्रता रहो
सवाल मत करो
कि पद्मावती को वरण करने वाला
13 पत्नियों का राजा पति
पवित्र कैसे है
उसने जीता है तुम्हें स्वयंवर में
वरण करो

जल मरो तब भी
जब पति युद्ध में हारे नहीं
लेकिन मारे गए
या मर गए अपनी मौत
तुम अग्नि वरण करो

कोई ले जाये छल से
या बलात
अग्नि में से हो कर लौटो

मेरा जौहर
तुम्हारी पवित्रता से है
पवित्रता सिद्ध करो

हीरामणि (तोता) बेचैन है
काल कालांतर उड़ता
चोंच मार-मार पन्ने पलटता है
पोथियों, शब्द कोषों में
जौहर के अर्थ ढूंढ़ता है
अग्नि के स्रोत पढ़ता है

चकमक पत्थर था वह
जिस से अग्नि निकली थी
अग्नि लेकिन पहले से थी सृष्टि में
चकमक पत्थर भी पहले से थे

किसी काल खंड में फिर
चकमक पत्थर पद्मावतियों में बदलते गए
पत्थरो की आग भी उनमें समाहित रही
आग सी जलती पद्मवतियाँ
राजाओं के सीने में आग सी मचलती रहीं

आग को जीतना
राजाओं का जौहर था
आग में राख हो जाना
पद्मवतियों का जौहर

पोथी किताबे पढ़ने के बाद

हीरामणि बेचैन है
जौहर जल मरना
जल मरना गौरव
गौरव से भरे हैं ग्रंथ

हीरामणि चिल्लाता है
रुको पद्मावती
आग को प्रचंड करो
प्रचंड करो ये आग
जौहर मत करो
जौहर दिखाओ
जला डालो तमाम जौहर गाथाएं
जला डालो पवित्रता बचा लेने के तमाम शौर्य ग्रंथ
राख होती स्त्री को बचा लो

(हीरामणि पद्मावती का तोता था)

वे आये थे साहब

वे आये थे साहब
दो तीन लोग थे
बोल रहे थे
मंत्री जी का खाना है तुम्हारे घर
तुम्हें चुना है हजारो में
खुशकिस्मत हो तुम

मैंने कहा बहुत
कि मंत्री जी लायक नहीं है मेरा घर
बिजली नहीं है
पानी नहीं है
भात भी सिर्फ चावल उबाल कर खाते हैं
कभी एक टेम, कभी कभी दो टेम
मेरा घर उनके काबिल नहीं साहब

मैंने कहा बहुत
मगर मेरे कहने का कब मोल था मेरे देस में
मेरे देस के सफेदपोश के सामने

वे बोले
सब हो जाएगा
तुम बस कोने में बैठ जाना
फोटो के बखत

वे आये साहब

घर पोत गए
सब हरा हरा दिखने लगा साहब
जनरेटर उठा लाये वे
कूलर ले आये
खाना भी ले आये
पत्तल-दोना सब था उनके पास
पानी भी था अलग
ठंडा और साफ
उन्होंने खुद किया सब इन्तजाम
मैंने नहीं छुआ कुछ भी
न उन्हें, न उनका खाना न उनके बर्तन

वे मुझसे बतियाये भी नहीं साहब
बस खाये
खाते रहे
मेरे सामने फेंका कुल्ले का पानी
और हाथ धो कर चले गए

मुझे तो यह भी नहीं पता साहब
वे क्यो आये थे
तुम ही बता दो साहब
वे अपनी भात
मेरे घर बैठकर क्यों खा कर गए

औरतें पागल होती हैं

औरतें पागल होती हैं
वे जानवरों से प्रेम करती हैं

गाय, भैंस, भेड़, बकरी
यहां तक कि उनके बच्चों तक से प्रेम करती हैं
उन बच्चों के जन्म के वक्त
वैसी ही पीड़ा के तनाव में रहती हैं
जैसे खुद जन रही हों बच्चा
बच्चे के जन्म के बाद वे
तनाव के समन्दर से बाहर आती हैं,
जन्म को उत्सव बना देती हैं
औरतें हद पागल होती हैं

नीम से प्रेम करती हैं
पीपल से प्रेम करती हैं
जंडी, कीकर, बेरी सबसे
पूजने की हद तक प्रेम करती हैं
बतियाती हैं उनसे सुख दुःख
उनके दुख पढ़ती हैं
वे चढ़ सकती हैं पेड़
लेकिन पेड़ पर नहीं चढ़ती
कहीं टूट न जाये डाली, झड़ न जाये पत्ता
कहीं दर्द में न आ जाये पेड़,
वे पेड़ के दर्द को महसूसती हैं
उम्र भर पेड़ बनी रहती हैं

औरतें अजीब पागल होती हैं

वे पानी से प्रेम करती है
बहुत कम पानी से नहाती हैं
कम पानी पीती हैं
बाल्टी, कनस्तर, मटका, टब सब भर रखती हैं,
किसी दिन फिर यूं ही
आंखों के रस्ते रिक्त हो जाती हैं,
नदी भरती हैं
समन्दर उड़ेलती हैं
औरतें सच मे पागल होती हैं

सोचता है पुरुष कि सच मे पागल हैं औरतें
वे प्रेम ही करेंगी हर घड़ी, हर मौसम, हर हाल
सच यह है लेकिन
कि वे पुरुष से प्रेम नहीं करती
वे मनुष्यता से प्रेम करती हैं

पुरुष से वे तब तक ही प्रेम करती हैं
जब तक बची रहती है उनमें
मनुष्य बने रहने की संभावना

हमने जिसे मां कहा

हमने नदी को मां कहा
और गन्दला करते रहे

हमने गाय को मां कहा
और दूह कर छोड़ दी

हमने धरती को मां कहा
रहने लायक नहीं छोड़ी धरती

हमने भारत को मां कहा
बांट दी नफरतों में उसकी संताने

हमने मां की शान में काव्य लिखे
और मां को बनारस छोड़ आये

इन सबके बावजूद हम
संस्कृतियों के स्तुतिगान गाती
श्रेष्ठ संताने बनी रही

वे राष्ट्रवादी नहीं हैं

वे
जो राह चलते गिराते जाते हैं कूड़ा
बहुत बर्बाद करते हैं पानी बिजली भोजन
गाड़ी धोते करते जाते हैं कीचड़
पड़ोसी के लिए बने रहते है सरदर्द
बेशक बजाते हो गाड़ी में वंदे मातरम
राष्ट्रवादी नहीं हैं

वे
जो मेट्रो बस रेल में
झपट कर लपकते हैं सीट
लाचार को देख आंख फेर लेते हैं
भीड़ को धकिया कर आगे निकलते हैं
बिना बारी लाइन तोड़ कर
हित साधते हैं अपने
बेशक खड़े होते हों राष्ट्रगान में
राष्ट्रवादी नहीं हैं

वे जो
दफ्तरों में सुविधा शुल्क
रेल में टी टी से अनुकूलता
अदालतों में रीडर की जेब गर्म
और राशन में गलत पीले कार्ड पर लेते हैं राशन
बेशक झुकते हो राष्ट्रध्वज के सामने
राष्ट्रवादी नहीं हैं

वे जो
लिंग जांच की पँक्ति में खड़े कोस रहे हैं लड़की को
वे जो जमाने के डर के आगे नपुंसक हुए जाते हैं
वे जिन्होंने जिंदा कंकाल बना दी हैं अपनी स्त्रियां
वे जिन्हें अस्तिव की परिभाषा से सरोकार नहीं
बेशक कहते हो भारत माता की जय
राष्ट्रवादी नहीं हैं

वे
जो टोपी दाढ़ी पगड़ी में भेद रखते हैं
जिनके अवचेतन में घुसे हैं वर्ण के कीड़े
जो नाम से पहले जाति पूछते हैं
बेशक करते हों संविधान की पूजा
वे राष्ट्रवादी नहीं हैं

वे जो राष्ट्रवादी नहीं हैं
राष्ट्रवाद के लिए सम्मानित होते हैं जब
राष्ट्रवाद कोने में नग्न खड़ा
चीत्कारना चाहता है
घुटी जुबान में मगर बस इतना ही कह पाता है
मेरे कपड़े मुझे वापिस लौटा दे राष्ट्रवादी

ये बचाएंगे

निजाम ने खरीद लिए कुछ सियार
कि ये बचाएंगे
ऊँची आवाज में जब हुआँ हुआँ करेंगे
तो भय से दुबक जाएगा अवाम

निजाम ने खरीद लिए कुछ खबरनवीस
कि ये बचाएंगे
जब हरा हरा दिखाएंगे सब ओर
तो जन सावन का अँधा बना ही रहेगा

निजाम ने खरीद लिए कुछ मठाधीश
कि ये बचाएंगे
जब कहेंगे अपने अनुयायियों से
कि निजाम आपके लिए चिंतित बहुत है
तो यकीन ही करते रहेंगे अनुयायी

निजाम ने खरीद लिए कुछ मदारी
कि ये बचाएंगे
जब चौक चौक लगाएंगे मजमा
निजाम की तारीफों का राग गाएंगे
तो तारीफ में लोग पगला ही जाएंगे

निजाम ने खरीद लिए कुछ सफेदपोश
कि ये बचाएंगे
जब झक सफेद वस्त्रो से दिखाएंगे शुचिता के संदर्भ
और जनता इसे ही शुचिता समझ

वाह वाह करती रहेगी
किसी दिन फिर
देखेगा हाकिम
कि बदलने लगा है हवाओं का अनुकूलन
बंगले के पंछियों में बेचैनी है
परजीवीयों में घबराहट है,
वह गहरे रंग के पर्दे हटाएगा
बाहर झांकेगा
देखेगा
तल्ख हवाएं अब जलने लगी हैं

वह खबरनवीसों को ढूंढ़ेगा
अखबार सब जल रहे होंगे
आग में आग बन रहे होंगे
भाग रहे होंगे सब खरीदे हुए खबरनवीस
सियार पिट रहे होंगे
मठाधीश मठों में बैठ
मौनव्रत धारण कर लेने की
अपनी अभिनय क्षमता का परीक्षण कर रहे होंगे
मजमे उलट दिए जाएंगे सब
सफेदपोश हवाओं का रुख देख
पाला बदलने की रणनीति में मशगूल होंगे

हाकिम बन्द कमरों में चिल्लायेगा
तेज कर देगा ए सी की ठंडक
बार बार पेशानी से पसीना पोछेगा

हवाओ से फैलती आग किसी भी पल
हाकिम के गुरूर को राख कर देगी

जिन्हें महारत थी

वे
जिन्हें महारत थी बोगियां जलाने में
खुद जल मरे मुफलिसी में एक दिन

जिन्हें महारत थी
आका के लिए एनकाउंटर करने में
खुद एनकाउंटर हो गए किसी दिन

जिन्हें महारत थी
पेट्रोल बम बनाने में
उसी पेट्रोल में भस्म हो गए एक दिन

जिन्हें महारत थी
बस्तियां जलाने में
जेल में सड़ते रहे अंतिम सांस तक

जिन्हें धर्मांधता में दिखता था भविष्य
जूती गाँठते देखे गए
किसी महानगर में

इन सभी के परिवार कत्तई
सम्भाले नहीं गए इनके पतन उपरांत,
इनके बच्चों को कभी नहीं मिला सम्मान
इनके पिताओं के कृत्यों पर
बच्चों को बिन पिता ही ठेलना पड़ा

जिंदगी का कठोर पहिया,
पिता को मूर्ख कहे जाने की उपाधियों के बीच
बड़े होते ये बच्चे
या तो अंत मे अपराधी हो गये
या सहम गए बुरी तरह

वे
जिन्हें महारत थी इनकी महारत को निर्देशित करने में
हंसते देखे गए इन महारथियों के अंत पर
बोलते सुने गए
कि इन अराजक लोगो से हमारा
कभी कोई संबंध नहीं था।

महाभारत है कि
सुनो बच्चों
एक संख्या होती है पिता सी
जिसे संसद कहते हैं
एक भीड़ होती है पुत्रों सी
जिसे लोकतंत्र कहते हैं
पिता धृतराष्ट्र कहिये
और पुत्र मटके के कौरव
जिनमें से अधिकतर ने मरना ही था बिना पहचान के
पिता चिंतित बहुत दिखाई देता है
पुत्र चिता हुए जाते हैं
आज बस इतना ही
न्याय के विषय में फिर किसी दिन

फ्रेंड रिक्वेस्ट

मैं भेजना चाहता हूं एक फ्रेंड रिक्वेस्ट
मार्क्स को
एक्सेस करना चाहता हूं उसकी वाल
देखना चाहता हूं
बदलते संदर्भों में
मार्क्स खुद कहाँ खड़ा होगा

भेजना चाहता हूँ एक फ्रेंड रिक्वेस्ट भगत सिंह को
पूछना चाहता हूं
अब क्या स्पेस है उस आजादी का
जो तुमने चाही थी अंग्रेजो से
ये कहते हुए कि
आजादी माने आजादी
सिर्फ ये नहीं कि गोरे चले जाएँ
और काले काबिज हो जाएँ
कैसे बेदखल करोगे उन्हें अब
देखना चाहता हूं

भेजना चाहता एक फ्रेंड रिक्वेस्ट आंबेडकर को
कि अब उनका कैसा रूख है आरक्षण पर
कैसा बदलाव चाहते हैं संविधान में
क्या कभी कोफ्त भी होती है
कि संविधान का मजाक बनाने वालो के ऊपर
क्यों नहीं बना पाये कोई अलग संविधान

एक अंतिम फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजना चाहता हूं गांधी को
उनसे इनबाक्स में बतियाना चाहता हूं घण्टों
उनसे बस बतियाना चाहता हूं
आज के दौर में क्योंकि
पूरा देश बतियाना चाहता है गांधी से

घंटा घर चौक

मेरे शहर में एक घंटा घर चौक है
लेबर बिकने आती है जहाँ अल्लसुबह
लेबर अर्थशास्त्र का एक शब्द है
अर्थशास्त्र इस लेबर को नहीं आती लेकिन
इन्हें इतना सा मालूम है
कि किश्तों में आदमी के भी बिकने की
व्यवस्था होती है हर अर्थव्यवस्था में
ये किश्तें कब पूरी होंगी
ये देह कब उनकी होगी
नहीं जानती लेबर
लेबर के हाथ में एक टिफिन है
जिसमें रखा खाना तय करता है
कि गरीबी की रेखा कहाँ खिंचेगी
कि कैसे बनाई जाएँगी
देश के उत्थान की योजनाएँ
अगरचे देश के उत्थान का अर्थ
देश के नागरिकों का उत्थान नहीं होता
ये नया अर्थशास्त्र है
इस नए अर्थशास्त्र का सबसे महत्वपूर्ण शब्द है चीप लेबर
जो दूर दराज के मुल्कों की आँख में चमक लाता है
इसी चीप लेबर का झंडा लेकर
हम बुलाने जाते हैं विदेशी व्यापारियों को
और शान बघारते हैं
कि we have enough potential for you
मेरे शहर का ये चौक

कोई ऐरा गैरा चौक नहीं
अंतराष्ट्रीय पोटेंशियल का स्रोत है
आओ चीप लेबर शब्द को
समझ की गहराई में भर लें

ठीकरा

तुम्हारे घर
जब मन्दिर बनाने का चन्दा मांगने आये थे कुछ लोग
तुम्हारे ही आजु बाजू तब
भूख से मर रहे थे कुछ मासूम
तुम ध्यान नहीं दे पाए

तुम जब जगराते की रसीद काट रहे थे घर घर जाकर
गांव में हस्पताल बनाने के लिए
मंत्री से मिलने जाना चाहते थे कुछ लोग
तुम समय नहीं निकाल पाए

मंदिर की चोखट नित दिन साफ करते
तुम आदर्श हो चले थे गांव के
विद्यालय में बेशक भर गन्दगी पसरी थी
पसरी रही

मन्दिर बन गया
बढ़ गया
सिद्ध भी हो गया
विद्यालय बरसो से पाँच तक अटका था
तुम्हारे गांव
तुम्हें ध्यान नहीं रहा

मंदिर में चोर घुस आए थे एक बार
तुम थानेदार से उलझ पड़े थे

चोर की धरपकड़ के लिए,
प्राथमिक चिकित्सआलय की दवाई
कहाँ चली जाती है रोज
तुमने कभी कान नहीं धरा

हे मेरे आदर्श नागरिक मित्र
तुम बेशक कोसते रहो सरकार को जी भर
मैं मुल्क की बर्बादी का ठीकरा
तुम्हारे सर फोड़ता हूँ

कोई तो है

कोई तो है
जो रोटी की बात नहीं करने देता
उलझाए रखता है
बेबात की बात में

कोई तो है
जो बरगलाए रखता है वाद प्रतिवाद में

कोई तो है
जो दबाए रखता है रोटी के सवाल मंदिर मस्जिद के जज्बात में

कोई तो है
जो रोटी की बात नहीं करने देता
और अपनी रोटियां सेंक जाता है।

अपने अपने गणित

परीक्षाएं देनी ही होंगी हमे
जन्म से मृत्यु के बीच
अलग अलग समयों में
अलग अलग विषयों की
उन विषयों की भी
जिनका ककहरा भी ज्ञात नहीं
उन विषयों की भी
जिनके ज्ञान के दावे हैं हमारे,
परीक्षा बतायेगी दावों की सच्चाई
गणित को अगणित होते देखते रहना होगा
और अगणित में से तलाशना होगा फलित
जैसे ज्योतिष का गणित से अगणित होना
और उस अगणित से फलित बांच डालना
दर्शन ये भी
कि फल की चिंता नहीं करनी
बेशक पढ़ा हो
कि H2O का फलित पानी होता है।
प्रक्षेपणों से पहले नारियल फूटते देखना ही होगा
देखना होगा सपरिवार गणेश विसर्जन
बहते देखते रहना होगा दूध का शिवलिंगों पर
और दुत्कारे जाते बच्चे देखते चुप रहना होगा
राह जाते चढ़ाना होगा शनिदेव को चढ़ावा
बालिवध देखते हुए जोर से बोलना होगा
जय श्री राम
जुए में हर धर्म हारे हुए को भी पुकारना होगा धर्मराज

परीक्षाओं के ऐसे दौर में सवाल करने की मनाही होगी
राह चलते मिल जाये फकीर
और गणित लगा कर बता दे कि बच्चा पैसा नहीं टिकता
तो हैरान ना होना
फल की चिंता ना करने वालो के पास कभी नहीं टिका पैसा
फकीर जानता है/ये उसका गणित है
हमारी अंगुली में चमकने लगे कोई नग अगले पल
या गले में ताबीज
तो समझना फकीर के गणित के आगे
अगणित हुआ जाता है हमारा गणित
हमारे ज्ञान के महल भुरभुरा कर गिर रहे होते हैं
और परीक्षा केन्द्रो पर खड़ा ईश्वर
हंस रहा होता है हमारी खाली उत्तर पुस्तिका देख कर
गणित जो दो और दो चार जानता है
उसके आगे दो और दो के अपरिमित फलित का गणित
कह रहा होता है
कि गणित सबके अपने अपने होते है साधक
जन्म और मृत्यु के बीच होने वाली परीक्षाओं में
अब बहुत हुए प्रयोग
गणित को अगणित होने से आखिर तो बचाना ही होगा।।

कहाँ थे कवि तुम

जिन समयों में
माहौल गर्म था
तुम पहाड़ पर गए हुए थे
जिन समयों में
धर्म का अर्थ हिन्दू
और मजहब का मतलब मुसलमान कहा जाने लगा
तुम्हारे शब्दकोष कोई मांग कर ले गया था
जिन समयों में
कविता को पहाड़, नदी, जंगल,
जमीन में भर उत्साह चीखना था, लड़ना था
तुम किसी किताब को पवित्र कह
आंखों चूम रहे थे
जिन समयों में
मुल्क की चेतना में जहर भरा जा रहा था
तुम्हारी रोमांस पर लिखी नयी किताब
अमेजन पर बिक रही थी
जिन समयो में कालेज जाती लडकी के
ब्लाउज में कोई हाथ डाल रहा था
तुम राष्ट्रवाद का स्थापना गान लिखते रहे
जिन समयों में
चीख कविता में जगह मांग रही थी
तुम कविता नहीं लिख सके

जाने वो कैसे लोग थे

जाने वो कैसे लोग थे
जो कह पाये मक्का में
कि जिधर तेरा अल्लाह नहीं
उधर मेरे पाँव कर दे

बोलना जबकि कुफ्र था उनदिनों

जाने वो कैसे लोग थे
जो बोल पाये उन समयों में
कि
कांकर पाथर जोड़ के मस्जिद दियो बनाये
ता चढ़ मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाये

फरमान ही जिस दौर में संविधान होता था

जाने वो कैसे लोग थे
जो बोल पाये
कि पोथी पढ़-पढ़ जग भयो
पंडित भयो ना कोय
ढाई आखर प्रेम का
पढ़े सो पंडित होय

प्रेम का दूसरा अध्याय जबकि सूली पर समाप्त हो जाता था उन दिनों
कैसे लोग थे
जो कह पाये एक पूंजीपति को

कि तुम्हारी रोटी में
गरीब का खून टपकता है सेठ

पूंजी की चिरोरियों के दौर जबकि तब भी थे

उस दौर में
उन समयों में
जब संविधान कोई परिकल्पना नहीं थी
बोलना अधिकार ना था
अभिव्यक्ति शब्द गर्भ मे भी आया नहीं था

उस दौर में बोल रहे थे आप
कि सूर्य को अगर पहुँच सकता है जल
तो सुदूर मेरे खेतों को भी
अवश्य ही पहुचं सकता है पानी

बोल रहे थे आप बेझिझक
कि पत्थर पूजे रब मिले
तो मैं पूजूँ पहाड़
सच! कैसे लोग थे आप?

कैसे लोग थे आप
जिन्होंने पैर से नापी दुनिया
अवतार की अवधारणा को नष्ट करते हुए

कैसे लोग थे आप
जिन्होंने खण्डी में उकेर दिए संघर्ष
और कहा

देखो, हम भी वही दो रोटी के संघर्ष वाले ही लोग हैं

कि तुम करो बेशक अवतारों का इंतजार
हम कर के बताएंगे
कि हर युग में बोलने की जुर्रत तो
करनी ही होगी।

चेतन आदमी

चेतन आदमी
विद्रूपताओं से लड़ता है
रिवाज बन घर घुस आई
धर्म बन सर चढ़ आयी विद्रूपताओं को
जड़ से पकड़ झिंझोड़ता है
तर्क से जगाता है
मग्न, खोए, सोये, अलसाये, सुसुप्त किरदार
द्वन्द्व के समन्दरों में ले जाता है
डुबोता है निकालता है
खार से खार धोता है
खरा कर देता है

अचेतन समाज कुलबुलाता है
बिलबिलाता है
शास्त्रों, ग्रंथों, श्लोकों, संदर्भों की आड़ ले
प्रतिकार करता है
नहीं ही ढूंढ़ पाता काट जब
श्राप देने की अघोरी मुद्रा में
आसमान की और उंगली उठा बड़बड़ाता है
कि 'ऊपर वाले को चुनौती देने का वही लेता है हिसाब
वही लेगा हिसाब'

तमाम श्रापों-अभिशापो, बद्दुआओं के इतर
अवश्यम्भावी हैं हादसे

होंगे ही
दो या ना दो चुनौती
कहो या डरे रहो कहने से
सहो, पूजो, हाथ जोड़ो, याचना करो
या लड़ो
जद से बाहर नहीं है कोई हादसों के

चेतन आदमी भी
घिर जाता है जिस दिन हादसों में
सारा अचेतन समाज तब अघोरी बन झूमता है
खुशियां मनाता है
श्मशानों मे नँगा नाचता है
श्राप की शास्वतता पर प्रवचन सुनाता है
स्वयं पर आये तमाम दुख-हादसे भूल वह
अनैतिक रूप से घेरता है
चेतन आदमी को

चेतन आदमी अपने चहुँ ओर देखता है
उन्ही विद्रूपताओं की घेरेबंदी
देखता है और हंसता है
हंसता है और तेज कर देता है चोट
हादसों में रहते हुए
हादसों को जीते हुए वह
चेतना के शिखर से देखता है
नीचे से बहते हुए हादसे

अचेतन समाज दरअसल नहीं जानता

चेतन और अचेतन के बीच का फर्क
कि हादसे भी उसी चेतना से देखे जाते है
जिस चेतना से देखी जाती है विद्रूपता

अचेतन समाज नहीं जानता कि
चेतन होना भय फैलाना नहीं है
भयों से मुक्त होना है
स्वयं से ईमानदार हो कर
भीतर तक संवाद में उतरना है

अचेतन समाज दरअसल नहीं जानता
की चेतन होना
छिपना नहीं है
भागना नहीं है
निरंतर लड़ना है
मरने तक
मार दिए जाने तक

धर्म

मेरे भीतर
गहरी जिज्ञासा रही बहुत बरस
कि पूछूँ
धर्मराज तो युधिष्ठर थे
वही थे धर्म मिमांसु
धर्म विवेचक
और धर्म की गहराई समझने वाले सबसे उपयुक्त पात्र
गीता का ज्ञान फिर अर्जुन को क्यों
जिज्ञासा दम तोड़ गयी एक दिन स्वतः
जीवन की पुस्तक ने पढ़ाया जब
कि
धर्म को जब-जब कंधे की जरुरत होती है
तब-तब वह
शास्त्र निपुण नहीं
शस्त्र निपुण के कंधे तलाशता है

दंगो के बाद

एक जली इमारत
दूसरी को देखती है
पूछती है
तुम्हें क्यों जलाया
पहली रुआंसी है
बताती है
मुल्क गिराने वाले सोचते हैं
कि मुल्क इमारतों से बनता है

घिसटने से इंकार करें

तुम यदि
मरने के लिए पैदा हुए हो
तो मरने का इंतजार मत करो
मर जाओ अभी

मर ही जाओ
कि
बरस-दर-बरस देह को ढोने का भी
हासिल क्या है आखिर

हासिल अगर कोई गणित है
कि तलपट मिलान करना ही जीना है
या जिंदगी के चिठ्ठे मे
लाभ-मद का बड़े से बड़े होते जाना जीना है
तो सैंकड़ो बरस रह लेना जिंदा
तलपट जीतने ना देगा
और लाभ-मद के पहाड़ के नीचे
दब मरोगे किसी रोज

तुमसे कहूँ
कि अभी मर जाओ
अगर मरने ही आये हो
तो तुमसे मरा भी ना जाएगा
कि एक पैर में जब
जिंदगी की रस्सी बंधी हो

और वही घसीट रही हो बेतरह
तो रस्सी ही छूट ना जाये
इसी डर में घिसटते रहोगे
मृत्यु के द्वार तक

कहो
कि मरने के लिए पैदा नहीं हुए हो
जीना चाहते हो
मरने तक

तो आओ
घिसटने से इनकार करें
सर्वप्रथम

झूठ के पांव

झूठ के पांव नहीं होते
एक सुना हुआ सच है

सच नहीं है मगर यह बात

झूठ के पांव भी होते हैं
झूठ के सर भी होते हैं,
झूठ के दस सर होते है
सौ पांव होते हैं

झूठ सच से तेज सोचता है
तेज भागता है

सत्य मगर यह है
कि मरता वह अपने सरों में उलझकर है
गिरता वह तब है
जब आधे पांव उसे पीछे दौडाना चाहते हैं
और आधे आगे

लड़की हो तुम

समन्दर में उतरने वाली लड़कियों से कहा गया
समन्दर और बोट जेंडर नहीं जानते
भूल जाना कि तुम लड़कियां हो,
और लड़कियों ने समन्दर जीत लिया

दंगल में उतरने वाली लड़कियों से कहा गया
उठा कर फेंक देना लड़को को
लडकों पर हाथ डालते वक्त भूल जाना
कि तुम लड़की हो
लड़कियों ने दंगल जीत लिया

प्रेम में पड़ने वाली लड़कियों से नहीं कहा गया
लड़की होना भूल जाना

गुजश्ता पीढ़ियों ने चीख-चीख कर कहा
सम्भल कर रहो
लड़की हो तुम

लड़की अब बीच रास्ते ठिठक गयी है
पूछ रही है
अगर वह निकल गयी दूर
जीतने
और हार गई दंगल
डूब गई समन्दर
निकल गयी आगे

और कर बैठी प्रेम
तब तुम
ये तो ना कहोगे
कि कुल कलंकिनी
क्यो याद नहीं रखा तुमने
कि लड़की हो तुम

मृत्यु की तैयारी पूरी रखो

मैं कब मरूंगा
ठीक से नहीं मालूम
तुम कब मरोगे
नहीं मालूम

संभव है कल मर जायें
हो सकता है आज ही मर जाएं
हो सकता है लिखते लिखते मर जायें अभी
कि यही हो अंतिम कविता

कौन बताये
कौन वजह
कौन धर्म
कौन राजनीत
कौन उत्सव
कब और कहाँ
जान माँग ले
जान छीन ले

छीन ले
और मुकर जाए
कत्ल से

सुनो
मृत्यु की तैयारी पूरी रखो

रक्त रंजक, मृत्युपोषक इस व्यवस्था में
जितने दिन जी लिए
शुक्र मनाओ

मुआवजा तय है हमारे मरने का
तय बस यह नहीं है
कि आज निकलो घर से
तो लौटोगे या नहीं

बोलना मत

कोई देखे
खा जाने वाली नजर से
देखने दो
वितृष्णा भर दे बेशक उसका देखना
भरने देना
बोलना मत

कोई छू जाए राह चलते
ट्रेन चढ़ते
बस में हिलते-डुलते
सिमट जाना
हिकारत भर लेना छुअन की भीतर
घुट जाना
बोलना मत

कोई पकड़ ले
मसल दे
चूम ले
दबा दे
छुड़ा कर खुद को दूर हो जाना
अनियंत्रित सांस को सहज करना
घृणा भर लेना भीतर तक बेशक
बोलना मत

जो भर लिया है भीतर

सब बेटी पर उड़ेल देना किसी दिन
डाल देना उस पर
एक-एक अनुभव की एक-एक जंजीर
शब्दो से बांध देना उसका पूरा अस्तित्व
डर से बांधना
डरा कर बांधना
उसे भी सिखाना
कि बोलना मत

हंसना उन पर
जो बंधन तोड़ रही हैं
लिखना उन पर
जो डर से निकल रही हैं
निंदा करना उनकी
जो बोलने लगी हैं

सुनो
तुम मत बोलना
बिल्कुल मत बोलना
देखती रहना बेटी को
जकड़नों में
जंजीरों में
सर से पांव तक

बोलने का काम स्त्री का थोड़े ही है
जो बोल रही हैं
वे तो संस्कारी नहीं हैं

सुनो
संस्कार बचाये रखना
दम घुट जाने तक
बोलना मत बस

नियम

धर्म ने कहा नियम में रहो
समाज ने कहा नियम में रहो
कानून ने कहा नियम में रहो

मैंने कहा
मुझे जीना है
सबने कहा नियम में जीओ

मैंने पूछा
जीने का नियम बता दो
सबने कहा
हमारा नियम ना टूटे बस
तुम जैसे मर्जी जीओ

गण दिल्ली आ रहा है

वे खेत से आ रहे हैं
वे गांवों से आ रहे हैं
वे ट्रेक्टर में भर कर आ रहे हैं
वे ट्रालियों में लद कर आ रहे हैं

हर बरस दूर से देखते थे जो
गणतंत्र पर्व
और अनुपम झांकियां

झांकियों के पीछे छिपा भारत हैं वे
जो दिल्ली आ रहे हैं

घोषणा की है उन्होंने
वे झांकी के पीछे नहीं छिपेंगे अब
खुद झांकी बनेंगे
खुद के हालात की झांकी देंगे

आयुध और सैन्य प्रदर्शन से सीना चौड़ा करते राजा को
मुल्क की असल झांकी दिखाएंगे

वे खेत लेकर दिल्ली आ रहे हैं
वे गांव लेकर दिल्ली आ रहे हैं
वे हुंकार लेकर दिल्ली आ रहे हैं
वे अलाव लेकर दिल्ली आ रहे हैं
घोषणा की है उन्होंने

कि राजा को शोंक बहुत है मेले लगाने का
वे मेला लेकर दिल्ली आ रहे हैं

गण
पहली बार
दिल्ली आ रहा है

स्वागत करो दिल्ली उनका

कौन लोग थे वे

जब मुल्क में
धर्म प्रयोग हुआ जाने लगा
तब कुछ लोग दिल्ली आए

टोपी दाढ़ी पगड़ी वालों को
नर मादा बच्चे बूढ़े
सबको साथ लेकर आये

उन्होंने धर्म का विस्तारित पक्ष रखा
कि धर्म कल्याण के लिए होता है
प्रयोग के लिए नहीं

धर्म
प्रेम के लिए होता है
नफरत के लिए नहीं

धर्म सियासत का पुर्जा नहीं
धर्म सत्ता का टूल नहीं कोई
धर्म मनुष्य में ऊर्जा का स्तूप है

कौन लोग थे वे
जिन्होंने दिल्ली आकर
राजा को धर्म का अर्थ समझाया
कि राजा का धर्म

जनता के दुख टटोलना है
धर्म की आड़ में वोट बटोरना नहीं

दिल्ली आए लोग बेहतर जानते थे
कि राजा के मुंह को खून लगा है
और कातर निगाहों से देखती जनता
सच मे निरीह जानवर है कोई

दिल्ली आए लोग जानते थे
खून लगे मुंह से जिंदा धर्म निकाल लेना
दूभर था
असम्भव नहीं था।

मुझे बनारस नहीं जाना

सोचता था
बनारस जाऊंगा कभी
कबीर से मिलने
पढ़ूंगा समझूंगा जानूंगा
कि जिस मोक्ष की चाह लिये
प्राण त्यागने आते हैं यहां श्रद्धालु
वहीं के कबीर ने
वहां प्राण त्यागने से इन्कार क्यों किया
क्या उन्हें नहीं चाहिए था मोक्ष
नहीं चाहिए थी मुक्ति?
क्यों खंडन किया उन्होंने मुक्ति गाथा का?

लोक-श्लोक-दिव्य लोग बताते हैं
कि काशी मरे तो राजा बने, स्वर्ग मिले
मगहर मरे तो गधा बने, नरक मिले
कबीर काशी बसे उम्र भर और मगहर चले गए अपने अंतिम

मोक्ष की फिसलन पर फिसलते लोगों के सामने
अपनी समझ पर खड़ा अकेला कबीर
कैसा था
मुझे देखना था

मैं सोचता था
बनारस जाऊंगा किसी रोज

गुरुबाग देखने
कि
काबा से लौटते
काशी में रुकते
कैसे बाबा नानक ने
एक पंगत मे बैठा दिए
सवर्ण-दलित/अमीर-गरीब

गंगा को गहराई तलक निहारते
कितनी गहरी बात बताई
कि गंगास्नान पाप मुक्ति की चतुराई है चतुरदास

मुझे बनारस उस गंगा को देखने जाना था
जिसमे डुबकी लगा लेने भर से पाप मुक्ति की आश्वस्ति मिल जाती है

बनारस जाना था मुझे
पंडे-पुजारी देखने
आश्रम-वृद्धवसेरा आलय-देवालय
मोक्ष-स्थल, विसर्जन-तल, अर्जित-बल
सब देखना था
मुझे ऐतिहासिक-मिथिहासिक नजर से भी
देखना था बनारस
बनारस पर लिखे शोध पढ़ने थे
ग्रन्थ देखने थे
मुझे देखना था
कि मुगल राज में कैसे बची रही काशी की शानो शौकत
मुगलों ने बचाई काशी
या कि शिव ने अवतार लिए अनाम

आह! अब मुझे बनारस नहीं जाना

देखना था जो धर्म का उत्कर्ष
पाप पुण्य का विमर्श
काशी का आकर्ष
कबीरी का तर्क
नानक के सौहार्द्र का मर्म
अब नहीं देखना

मन अब बहुत उदास हो गया है

मन अब
मगहर जाना चाहता है
कबीर से मिलना चाहता है
पूछना चाहता है
आप काशी से विरक्त क्यों हुए कबीर
कितने साहस से आपने
मोक्ष तक की गाथा व्यर्थ करार दे दी

मुझे पूछना है कबीर से
जो राजा होने की अभीप्सा लिए
बार बार आता है बनारस
वह और कितना राजा होना चाहता है

मुझे पूछना है कबीर से
एक राजा को
अपने प्रपंच की व्यर्थता का बोध कब होता है

नग्न होना

निर्वस्त्र होना नहीं होता
नग्न होना कुछ और है

नग्न होना बेशर्म होना है
बेशर्मियों का समूह है नग्न होना

महावीर का निर्वस्त्र होना
नग्न होना नहीं
द्रोण का एकलव्य से अंगूठा मांग लेना नग्न होना है

द्रोपदी को निर्वस्त्र कर देना
द्रोपदी का नग्न हो जाना नहीं होता
दांव पर लगाई जिन्होंने पत्नी
जो बांधे रहे हाथ प्रतिज्ञाओं के अनुपालन में
जो जंघा पर हाथ मारते रहे बेशर्मी से
जो घिघियाये रहे लेकिन बचाने नहीं आ सके द्रोपदी
वे सब नग्न थे

जिन्होंने चरित्र के आक्षेप लगा कर निकाल दी औरतें घर से
जिन्होंने घर में कैद करके रखी औरतें
और खुद बैंकाक-पताया की उड़ाने भरते रहे
जो छोड़-छोड़ भागे औरतें
बड़े आदमी होने के लिए
वे सब नग्न थे
जिन्होंने अवाम को नहीं सुना उनके कष्ट में

जिन्हें सड़क पर गर्भ गिराती स्त्री नहीं दिखी
जिन्हें मर गए मजदूर
दफन होते किसान नहीं दिखे
सांस के लिए जूझती अवाम नहीं दिखी
वह राजा नग्न है

निर्वस्त्र होना नग्न होना नहीं होता
बेशर्मियों के समुच्चय जोड़कर जो
सुंदर वस्त्र पहन इठलाता है
वह भद्दा असुंदर नग्न होता है

जो नग्न होता है
वही नग्नता के लिए दुत्कारा जाता है
निर्वस्त्र होना नग्न होना नहीं होता
वस्त्रों आभूषणों से सजे लोग भी
नग्नता के लिए दुत्कारे जा सकते हैं

बिना लड़खड़ाये

कभी नहीं गिरा आदमी

गिर रहा है इनदिनों बिना लड़खड़ाये
जैसे हरा भरा कोई पेड़ सड़क पर आ गिरे औंधे मुँह
जैसे कोई बहुमंजिला इमारत भरभरा कर ढह जाए

आदमी
तड़प रहा है
इंतजार इंतजाम और अंजाम से डरा हुआ
तड़प कर
मर रहा है

मर कर इंतजार कर रहा है
अंतिम शरणस्थली पर
इस गए गुजरे सिस्टम से
मुक्त होने के लिए

साजिशें अट्टहास करती हैं
कायनात कांप जाती है
सत्ता गुरुर में है
अवाम अजीब कशमकश में
कि बचायेगा कौन

ईश्वर

दुबक गया साजिशों का अट्टहास सुनकर
या मर गया है

मरे हुए ईश्वर से
लोग बचाने की गुहार लगा रहे हैं

स्टेचू

गली में
बच्चे खेल रहे थे जब स्टेचू का खेल
दूर कहीं
स्टेचू से खेल रचने की योजना बन रही थी

योजना में खेल था
और खेल से नियोजन था
कि बोलना भर है स्टेचू
और स्टेचू हो जाता है हारा हुआ आदमी

अवाम भी हारती है हर बार
किसी को जिता कर
और स्टेचू बनी रहती है शेष समय

जीता हुआ निजाम
स्टेचू स्टेचू खेलता
चाहता है
स्टेचू ही रहे अवाम
स्टेचू बनी रहे
स्टेचू से बौनी रहे
स्टेचू को नियति मान ले
स्टेचू को नियंता मान ले
स्टेचू की स्तूति रट ले

खेल में खेल हुआ महापुरुष

स्टेचू के कंक्रीट में से
चीत्कारना चाहता है उन्मुक्त
बताना चाहता है खेल का सत्य
स्टेचू में मगर सब चीज बनायी जाती है
एक जुबान नहीं बनाई जाती
कि स्टेचू में फंसा महापुरुष ही कहीं
खोल न दे पूरे खेल की पोल

स्टेच्यू बच्चों का खेल नहीं
स्टेच्यू जनता से खेलने का खेल है दरअसल

गलती जनता की थी

कुछ लोग
बैंक की लाइन में मर गए खड़े खड़े
कुसूर उनका था,
जोर नहीं था गर पैरों में
तो क्यों खड़े हुए

कुछ लोग पलायन में मर गए
रेलवे ट्रैक पर गडमड मिली उनकी रोटियां और बोटियाँ
कुसूर उनका ही था
रेलवे ट्रैक सुस्ताने की जगह थोड़े ही है,
कोई जिंदा बचा होता उनमे तो बताता
कि सुस्ताये नहीं थे वे
सामूहिक आत्महत्या थी वह

कुछ लोग मर गए सरकार से हक मांगते हुए
हक किस बात का
जब चुना है तो ईश्वर समझो उसे
ईश्वर पर विश्वास करो
अविश्वास में मरे वे सब
उनकी ही गलती थी

कुछ लोग महामारी में मर गए
उनका तो पक्का ही कुसूर था
जब फेफड़े नहीं झेलते महामारी
तो क्यों आये चपेट में

जनता जो जनार्दन थी
दनादन मानने लगी कि भूल उनकी ही थी
उन्होंने भूल मानी अपनी और ऑक्सीजन नहीं मांगी
उन्होंने भूल मानी अपनी और शांति से मर गए
उन्होंने भूल मानी अपनी
और चुपचाप बहा आये परिजन गंगा में

गंगा रोई
ईश्वर नहीं रोया

गंगा हैरत में थी
कि ईश्वर प्रलय चुन रहा है
ईश्वर मुतमईन था कि मर कर भी जनता
उसे ही ईश्वर मान रही है।

हम तुम्हें झुक कर सलाम करते हैं।

हम जब
बच्चों को बताते थे
कि हम एक जनतंत्र के नागरिक हैं
तो हमारी जुबान थरथराती थी
हमारी आवाज में विश्वास नहीं होता था
बच्चे समझ जाते थे
कि लोकतंत्र का मतलब है थरथराना

वे पुस्तक की भाषा और जिस्म की भाषा में अंतर कर लेते थे उसी वक्त

हम जब पढ़ाते थे बच्चों को
कि अहिंसा एक बड़ी शक्ति है
बड़े आंदोलन लड़े और जीते गए हैं अहिंसा से
तो खुद की जुबान पर हिंसा आने लगती थी
अहिंसा से विश्वास गिराते हम
न जाने कब
घर में ही करने लगे थे हिंसा

हम जब बच्चों को बताते थे
देश की सरकार जनता के लिए होती है
जनता से होती है
तो खुद के जनता होने पर संदेह होने लगता था

आवाज, लोकतंत्र, आंदोलन, हक, इंकलाब
सब किताबी शब्द लगने लगे थे

सब शब्दों में अजीब सी विरक्ति भरने लगी थी

हम आपको
झुक कर सलाम करते हैं दोस्त
तुमने
हमारे जिस्म की भाषा से शब्द मिला दिए
तुमने कील गड़ी राहों में फूल उगा दिए
जिन्होंने डंडे बरसाए उन्हें कौर खिलाया
अहिंसा का कितना व्यापक रूप दिखाया

हम तुम्हें झुक कर सलाम करते हैं किसान
तुमने बच्चों के आगे रोज शर्मसार होती हम अवाम को
बड़ी शर्म से उबार लिया।

मकड़ी

किसी रोज मैं
बिखर कर, फैल कर
सोना चाहता हूं निश्चिंत
आसमान को निहारना चाहता हूं खुली आँख
आकाशगंगा हो जाना चाहता हूं
बहना चाहता हूं निरंतर,
सिमट जाता हूँ लेकिन
सिकुड़ जाता हूं
सहम जाता हूँ
सहमा रहता हूँ निरन्तर
किसी अबूझ भय से

अपने ही बुने जाल में
उलटा लटका मैं
छटपटाता हूं कि सुरक्षित निकल जांऊं
और मोह
कि जाल भी बना रहे सुरक्षित

कोई कहे
कि जाल हटाना ही
एकमात्र उपाय है निकलने का
तो बरस पड़ना उस पर
कि जाल ही तो अर्जित पूँजी है
और लटके रहना उम्र भर
सीधे ही होने भर की छटपटाहट में

किसी रोज मैं
जाल में मृत पाया जाऊं
तो मेरी अंतिम और एकमात्र इच्छा पर सोचा जाए
कि फैल कर, बिखर कर सोने की
जीते जी भी
कोई सूरत है क्या?

खंगाला जाए लार का इतिहास भी
कि जाल की वृत्ति वाला कोई एक भी
मरने तक
क्या बचा रह पाया अपने ही जाल में
उलटा लटकने से?

किसान जानता था

किसान जानता था
एक दिन में उर्वरा नहीं होती
बंजर जमीन
एक दिन में प्रस्फुटित नहीं होता बीज
एक दिन में तो समतल भी नहीं होता खेत

किसान जानता था
खोदनी पड़ेगी पथरीली जमीन
अपनी उंगलियों से
अपने हाथों से काटनी होंगी कंटीली झाड़ियां
चुनने पड़ेंगे कांटे
हटानी होगी खरपतवार
झेलनी होगी मौसमों की मार

किसान दिल्ली जाने से पहले
आश्वस्त था
कि बंजर पथरीली राजनीतिक जमीन को
पथरीला नहीं रहने देंगे
हटा देंगे कंटीली झाड़ियां
नरमी से तर कर देंगे हर जर्रा

लौट आया है किसान
सब आंखों में नमी छोड़
पथरीली जमीन में उम्मीदो के बीज डाल
कंटीले कानफोड़ू (मीडिया) कांटो की खरपतवार को हटा

किसान
जिस जमीन पर खड़ा होता है
उसे प्रेम से सींचता है
प्रेम उगाता है
किसान को
सबसे खराब लगता है जमीन का बंजर हो जाना
किसान को सबसे खराब लगता है
अपनी सरजमीं पर खरपतवार का फैलते जाना

वे किसान थे

जिन्होंने मुल्क की बंजर भूमि पर
हरियाली की इबारत लिखी
वे किसान थे

जिन्होंने कांटे चुनकर अपने पास रख लिये
और फूल तुम्हें भेजे
जिन्होंने जड़े अपने पास रखी
और फल तुम्हें भेजे
वे किसान थे

किसान को खेत मे रहना था
खेत का होकर
फिर किसी दिन उसे मालूम हुआ
कि मुल्क का लोकतंत्र बंजर होने लगा है

किसान को सबसे ज्यादा चिढ़
बंजर शब्द से है
किसान ने कहा
बन्जर से बन्जर जमीन
एक बरस में उपजाऊ हो जाती है

कितना सही था किसान का अनुभव
कितना बेहतर जानता है मुल्क को
खेत तक सीमित किसान

और वे
जो
मुल्क को जानने, बताने समझाने के व्यवसाय में थे
उन्होंने किसान को आतंकवादी कहा

90 दिन

90 दिन तीन माह होते हैं राजा जी
तीन माह में एक भ्रूण
प्राण को प्राप्त कर लेता है
तीन माह में बीज
विकसित होकर फूल होने लगता है
तीन माह में सब्जी पक कर बाजार में आ जाती है
तीन माह में किसान
फसल पकने की उम्मीद बांधने लगता है

तीन माह में नव ब्याही लड़की
नए घर मे समायोजित होने लगती है
तीन माह में कोई आदत
अपना स्वरूप बदल लेती है
तीन माह में हमारी मनस्थिति की
अवस्था बदल जाती है
तीन माह में एक मौसम बदल जाता है

तीन माह मे एक चूहा लम्बा और गहरा बिल खोद लेता है
तीन माह में एक चिड़िया घोंसले को बुन लेती है पूरा
तीन माह में मधुमखियों का छत्ता
शहद से भर जाता है
तीन माह में कैंसर पूरे जिस्म में फैल जाता है
तीन माह में कोई बिस्तर पर पड़ा मरीज
मरने की दुआ मांगने लगता है
तीन माह में तीमारदार भी हाथ खड़े कर देता है अंततः

तीन माह से ज्यादा मकान मालिक भी
किराए की उधार नहीं करता
हर उधार की हद तीन माह से बड़ी नहीं होती

और तुम
ढीठ
मूढ
जड़ बने रहे तीन माह?
ओ जड़ सत्ता के मुखिया

तीन माह
जो ठहर जाता है न तूफानों के सामने
वह विस्तार का आधार पा जाता है

आप यह बात
समझ नहीं रहे राजा जी!

किसान के पास

किसान के पास बीज है
पुलिस के पास पानी
राजा की मिट्टी खोदेंगे
जरूर उगेगा बदलाव का पौधा

मजदूर

मुंशी प्रेमचंद की एक कहानी है 'पूस की रात' जिसमे किसान मजदूर होना स्वीकार कर लेता है।

मजदूर और नौकरी पेशा यह कौम 'पूस की रात' के 'हल्कू' हैं। आप नजर दौड़ाएं कि मजदूर आंदोलन कोई लड़ा गया हो या असंगठित नौकरी पेशा लोगों का कोई आंदोलन आपको याद आता हो। 40 प्रतिशत यह आबादी पूस की रात गुजारने की जुगत में लगी है।

एक कविता इसी संदर्भ में।

मजदूर

किसी मजदूर ने नहीं पढ़ी होगी 'पूस की रात'
सबने तय किया मगर
कि वे किसानी नहीं करेंगे
किसानी करेंगे तो भी मजदूरी करेंगे
खेती नहीं संभालेंगे

मजदूर को राम पर भरोसा नहीं था
कि तय समय बरसेगा
कि बरसेगा भी तब
तबाह करेगा या बचाएगा

मजदूर को महाजन पर भरोसा नहीं था
कि बची रहने देगा आमदन
या ब्याज बट्टे में शून्य कर देगा सब

मजदूर को सरकार पर भरोसा नहीं था
कि बचा लेगी वह किसानी
देगी मेहनत का मोल

उसने मेहनत का वसूल उसी दिन मांगा
और मजदूर हो गया

कुछ लोग
बिना पढ़े मजदूर हुए
कुछ पढ़ कर मजदूर हो गए
कुछ दिहाड़ी पर मजदूर हुए
कुछ मासिक पर मजदूर हो गए

सबके पीछे भाव एक ही था
कि व्यवस्था
उनका भरोसा नहीं जीत पाई
और उन्हें व्यवस्था पर भरोसा नहीं रहा

व्यवस्था के लिए ये मुफीद लोग थे
जो डरे सहमे
रोज की सांसों पर खड़े
पूस की रात गुजार देने की जुगत लगाते
व्यवस्था में जीने भर की राह तलाशते रहे
व्यवस्था को अपने लिये मोड़ देने का काम
इन्होंने सदियों से छोड़ रखा था

यह कौम मेहनत बेचती रही
पिटती रही

बेजार रही
गरीब रही
इस कौम ने कभी नहीं उठायी आवाज
यह कौम कभी विरोध की आवाज में शामिल नहीं हुई

सत्ता जानती है
ये सड़क पर मरें या रेलवे ट्रैक पर
या कि घुटन से मर जाएं पंखों से लटक कर
ये कभी सत्ता को चुनौती नहीं देंगे
इनके आंसू
मिट्टी में मिलकर
मिट्टी को उर्वरा करेंगे
सीमेंट में गिरकर सीमेंट को मजबूत बनाएंगे

मुझे उम्मीद सिर्फ स्त्रियों से है

मुझे उम्मीद सिर्फ स्त्रियों से है
कि चहुं ओर फैली वैमनस्यता को
वे ही कम करेंगी

वे ही समझाएंगी बचाएंगीं बच्चों को
गाली बाज होने से

वे बांट के जहर को फैलने से रोकेंगी
वे मनुष्यता के परचम को खोल कर
आसमान में लहरा देंगी एक दिन

वे नफरत के जलते सूर्य पर
प्रेम की अंतहीन बौछार करेंगी
ठिठुरती मनुष्यता को ओढ़ा देंगी
करुणा का गर्म लिबास

वे जलते भटकते लड़ते राजनीतिक पुरुष को
किसी दिन
स्त्री में बदल देंगी

मुझे डर सिर्फ एक है
पुरुष की राजनीति में उलझी स्त्री
कहीं खुद पुरुष न होने लगे।

चाल-चलन

1
चाल अनुवांशिक होती है
और चलन समाज प्रेरित
इस प्रकार एक मनुष्य का
चाल-चलन निर्मित होता है

2
कुछ मनुष्य
चाल में अभिनय मिला लेते हैं

उनकी सामाजिकता में भी
भरपूर अभिनय होता है

ऐसे मनुष्य
चाल-बाज होते हैं
और चलन में रहते हैं

3
चाल-चलन
मनुष्य में मनुष्यता का मापक नहीं
सामाजिकता का मापक है
मनुष्यता और सामाजिकता
एक जैसे दिखने वाले
दो अलग रास्ते हैं

अच्छे-चाल चलन वाले लोग
अक्सर, बदकार, मनुष्य पाए गए!

आओ खुदाई करें

आओ कुदाल फावड़ा कस्सी लेकर आओ
मुल्क को खोदने का काम मिला है हमें

खेत खाले नहर तालाब कुंआ बावड़ी नहीं खोदनी
मुल्क खोदना है

बीजना क्या है
यह नहीं बताया गया है
बीजने का काम वे खुद करेंगे
हमें सिर्फ खोदना है

हम मजदूर हैं
किसान थोड़े ही हैं
जो यह सोचें
कि हमें बीजना क्या है

हम बिना भाड़े वाले मजदूर हैं
बिना भाड़े वाले हम मजदूर
अक्सर, मुल्क ही खोदते हैं

भूल जाता हूं बहुत कुछ

1

मेरी उम्र अभी पचास की नहीं है
मगर भूल जाता हूं बहुत कुछ

वाणिज्य स्नातकोत्तर हूं, मगर
वाणिज्य मंत्री का नाम याद नहीं
उद्योग जगत के तमाम बड़े नाम याद हैं
उद्योग मंत्री का नाम याद नहीं
रेल यात्री हूं मगर
रेल मंत्री का नाम याद नहीं
शिक्षित हूं मगर
शिक्षा मंत्री का नाम याद नहीं
ये तो भला हो किसानों का
जिन्होंने कृषि मंत्री का चेहरा याद करवाया

कुछ भी भूल जाने पर
बचपन में मां कहती थी
लालचंद पंसारी से छटाकी दिमाग ले आओ
डॉक्टर मित्र कहता है विटामिन बी की कमी है
और राजनीतिक मित्र कहता है
निजाम में कुछ चेहरों की औकात से बड़े होते हैं पद
तुम खामखाह विचलित मत हुआ करो

मेरी उम्र पचास की नहीं है मगर

मैं अपने सांसद का चेहरा भूल जाता हूं
अपने ही विधायक का नाम याद नहीं रहता
पत्नी कहती है ये भी कोई भूलने वाले नाम हैं?
और मैं उसी से पूछता हूं कि तुम ही बता दो
वह माथे पर उंगलियां फिराती है
कहती है मरजाने नजर भी तो नहीं आते कि याद रहें

मैं आश्वस्त होता हूं कि
अधिकतर लोगों की याददाश्त मेरे ही जैसी है
उम्र का तकाजा नहीं है
निजाम में कुछ चेहरों की औकात से बड़े होते हैं पद
मुझे राजनीतिक मित्र की बात ही
अंतिम सत्य जान पड़ती है

2

मैं आश्वस्त होता हूं
तो राजनीतिक मित्र नया शिगूफा छेड़ देता है
कहता है
इस मुल्क में हर नागरिक की
भूल जाने की आदत कमाल है
हिंसा, कत्लोगारत, खून खराबा तक भूल जाती है
लूट, चोट, खोट कुछ याद नहीं रखती
लुटेरे, हत्यारे, नकारे बार-बार जीत जाते हैं
और जनता
अपनी भूल जाने की मस्ती में मस्त रहती है
लुटती नुचती पिटती रहती है

मुझे फिर चिकित्सक मित्र की बात सत्य लगती है
कि मुल्क में विटामिन बी की बड़े स्तर पर कमी है
भ्रम में रहने और भूल जाने की आदत वहीं से आती होगी।
मैं कहता हूं
खराक में अब बिटामिन बी जरूरी कर दिया जाना चाहिए
तो समाजवादी मित्र नया शिगूफा छेड़ देता है
कहता है
80 करोड़ लोग पेट भरने की लड़ाई लड़ रहे हैं
और निजाम की पुरजोर कोशिश है
कि वे जीत न जाएं ये लड़ाई

मुझे मां की ही बात अंतिम सत्य लगती है
कि बचपन में मैंने
छटाकी दिमाग (समझ) का
इंतजाम क्यो नहीं कर लिया
जो मेरी समझ भी मित्रों जैसी होती

मेरी उम्र अभी पचास की नहीं है
विटामिन बी की भी कमी नहीं है
फिर भी भूल जाता हूं बहुत कुछ

मैं भी क्योंकि
हूं तो जनता ही

नग्न होना

निर्वस्त्र होना नहीं होता
नग्न होना कुछ और है

नग्न होना बेशर्म होना है
बेशर्मियों का समूह है नग्न होना

महावीर का निर्वस्त्र होना
नग्न होना नहीं
द्रोण का एकलव्य से अंगूठा मांग लेना नग्न होना है

द्रोपदी को निर्वस्त्र कर देना
द्रोपदी का नग्न हो जाना नहीं होता
दांव पर लगाई जिन्होंने पत्नी
जो बांधे रहे हाथ प्रतिज्ञाओं के अनुपालन में
जो जंघा पर हाथ मारते रहे बेशर्मी से
जो घिघियाये रहे लेकिन बचाने नहीं आ सके द्रोपदी
वे सब नग्न थे

जिन्होंने चरित्र के आक्षेप लगा कर निकाल दी औरतें घर से
जिन्होंने घर में कैद करके रखी औरतें
और खुद बैंकाक-पताया की उड़ाने भरते रहे
जो छोड़-छोड़ भागे औरतें
बड़े आदमी होने के लिए
वे सब नग्न थे
जिन्होंने अवाम को नहीं सुना उनके कष्ट में

जिन्हें सड़क पर गर्भ गिराती स्त्री नहीं दिखी
जिन्हें मर गए मजदूर
दफन होते किसान नहीं दिखे
सांस के लिए जूझती अवाम नहीं दिखी
वह राजा नग्न है

निर्वस्त्र होना नग्न होना नहीं होता
बेशर्मियों के समुच्चय जोड़कर जो
सुंदर वस्त्र पहन इठलाता है
वह भद्दा असुंदर नग्न होता है

जो नग्न होता है
वही नग्नता के लिए दुत्कारा जाता है
निर्वस्त्र होना नग्न होना नहीं होता
वस्त्रों आभूषणों से सजे लोग भी
नग्नता के लिए दुत्कारे जा सकते हैं

सुंदर स्त्रियां

प्रेम कथाएं
स्त्री के सौंदर्य प्रतिमान खड़े करती
जरूरी बताती है
स्त्री का सुन्दर होना
गोकि
प्रेम की जरूरी योग्यता है
लड़की का सुन्दर होना

फिल्म पटकथाएं इन्हीं प्रेम कहानियों की
अपच हैं

प्रेम के ग्रन्थ
जब प्रेम लिख रहे होते हैं
तब भी वे
दैहिक सुंदरता के वर्णन में मशगूल रहते हैं

ताजमहल की नींव में
कुछ सिसकियां लेते पत्थर दबे हैं
वे कुरूप नहीं हैं जो नींव में चले गए
उम्र दराज होती स्त्री की यह व्यथा यात्रा है
कि वह गुम्बंद नहीं नींव होने लगती है

बादशाहों ने, प्रेमियों ने
प्रेम नहीं किया
सौंदर्य के भ्रम खड़े किए
कि लावण्य देख

लाल डोरिया तैरने लगी जो आंखों में
दिल मचलने लगा हासिल कर लेने को
उसे ही प्रेम कह दिया गया

स्त्रियों ने
प्रेमिकाओं ने
पुरुष में सुंदरता नहीं चुनी
प्रेम कथाओं में इसका जिक्र नहीं कही

प्रेम के अंतरंग पलों में
स्त्री और पुरुष दोनों ने
स्त्री देह को भोगा है
स्त्री ने सिर्फ यह चाहा
कि सुंदरता का बोध उसमें मरने न दिया जाए
वह प्रेम के बोध को अंतस में जिलाये रखेगी उम्र भर

ताजमहल के गुम्बद पर
खून के छींटे हैं
संगरमर लाल है
एक रानी के सौंदर्य बोध में बौराये बादशाह ने
नींव में दबे पत्थरों का
सौंदर्य बोध छीन लिया

सुंदर लड़कियों को
अधिक प्रेम मिलता है पति से
माँ बता रही थी

मां स्त्री की विशेषता नहीं
पुरुष की कमजोरी बता रही थी

राजा और शतरंज

राजा की गर्दन में जब
शतरंज गड़ जाती है

वह झुका नहीं सकता
अपनी गर्दन तब
न घुमा सकता है,
सिर्फ देख सकता है सामने

वह बिसात पर खड़ा
मोहरों से डरता है
हर नागरिक को मोहरा समझता है

हरबार मंत्री को आगे करता है
सेनापति की आड़ लेता है
घोड़े, हाथी, पियादों के पीछे छिप कर रहता है

राजा जब इस डर से घिर जाता है
कि वह बिसात पर है
तब वह राजा नहीं रह जाता

जब एक राजा
राजा नहीं रह जाता
तब वह भी शतरंज का एक मोहरा होता है मात्र
जिसे कोई दृश्य/अदृश्य हाथ
सिर से पकड़ता है

और इधर से उधर रख देता है

राजा का सिर किसी के हाथ में होना
शतरंज का खेल है

और देश
शतरंज की बिसात नहीं होता

क्या है कविता

कविता भर्त्सना का औजार नहीं
भड़ास नहीं कविता
निज वेदना जाहिर करने का जरिया नहीं
शब्द विलास नहीं कविता
उकड़ू पड़े जीवन के इर्द-गिर्द
घूमते ख्यालातों की पोटली नहीं है कविता
अपनी जकड़ने तोड़ो कवि
उकड़ू से सीधे तनो पहले
फिर देखो सभी उकड़ू बैठे लोगों को

खुद से पूछो
क्या तुम्हारी कविता इन्हें सीधा खड़ा कर सकती है?
कविता बस इतनी सी चीज है

स्थगित मत करना कविता

हवाओं में जहर हो
सर पर कहर हो
डर हर पहर हो
ऐसे में कौन लिखे कविता
कैसे लिखे

कवि मित्र ने कहा है
इन्हीं समयों में लिखी जानी होनी है कविता
इन्हीं समयों में बांची जानी होनी है
जब कोई नहीं खड़ा होता रीढ़ के बल
कविता उनकी रीढ़ को बल देती है

कवि मित्र ने कहा है
कविता कुछ नहीं करती
आदमी के भीतर बैठ जाती है बस
कविता का भीतर पैठ जाना
जहर का एक मात्र उपचार है

कविता
ऐसे ही समयों के लिए है कवि
स्थगित मत करना कविता तब
जब कविता की सबसे ज्यादा जरूरत हो।

तुम्हारे चले जाने के बाद

'चले जाना'
वाक्य नहीं है सिर्फ
दुर्घटना है
श्राप है
विध्वंस है
यात्रा है नई

तुम्हारे चले जाने के बाद
पीछे नहीं आऊँगा तुम्हें खोजने

खोजूंगा
खोदूंगा
खुद को ही
तुझ से मिलने जाऊंगा

दुर्घटना से वाकस्ता होऊंगा
श्राप को जीऊंगा
चेतना की नजर से देखूंगा विध्वंस
यात्रा में ठहरूंगा
खोजने-खोदने के क्रम में
मोहनजोदड़ो हो जाऊँगा किसी रोज

अवशेष में भी
जिन्दा रखूंगा कोई कहानी
बचा रखूंगा सभ्यता का अंश

कि असभ्य से सभ्य होने की यात्रा में
शेष बचूं जो
सहेज लिया जाऊं
अवशेष होने पर भी

सुनो
तुम भी
मुझे मत खोजना
स्वयं को खोजना
कि प्रेम की विरक्तियाँ
स्वयं की खोज का
मार्ग प्रशस्त करती हैं।

जब कोई तुम्हें सेक्युलर कहे

जब कोई तुम्हें सेक्युलर कहे
उसे धन्यवाद कहना

बाबा नानक बुद्ध कबीर की किताबें भेंट करना उसे
एक प्रति संविधान की देना
कि पढ़ा करो

जब कोई तुम्हें सेक्युलर कहे
तो चाय पर बुलाना उसे
और दिखाना भारत का दिल
बताना उसे
यह विशेष दिल है
जो कई टुकड़ो से मिलकर बना है
टुकड़े मत करो इसके

जब कोई तुम्हें सेक्युलर कहे
तो उसे गालीबाज मत कहना
वह भटका हुआ तुम्हारा ही भाई है
उसे बताना
कि सेक्युलर होना वैश्विक अंतर्दृष्टि की तरफ बढ़ना है
कुएं का मेंढक मत बोलना उसे

जब कोई तुम्हें सेक्युलर कहे
उसे ठंडा जल पिलाना
और बताना

ये जल हिन्दू मुस्लिम नहीं है
ये प्रकृति हिन्दू मुस्लिम की नहीं है
ये मुल्क तुम्हारा या उनका नहीं है
उनका है जो पाने से पहले देने की सोच से लैस है
तुम उसका देना पूछ कर उसे शर्मिंदा मत करना

जब कोई तुम्हें सेक्युलर कहे
उससे पूछना
तुम्हें धर्म बचाना है या मनुष्यता
उसे मनुष्यता मत सिखाना
बस
उसके साथ मनुष्य बने रहना
वह सेक्युलर होना समझ जाएगा किसी रोज